By:- Sweta Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

B.A. History
Deg-I
Paper-I

नव पाषाणकालीन संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन
(Give an account of the salient features of the Neolithic culture)

भारत में भी मध्य-पाषाणकालीन संस्कृति के पश्चात नव-पाषाणकालीन संस्कृति का प्रादुर्भाव हुआ। परन्तु यह कहना कठिन है कि इसका प्रादुर्भाव कब किस जाति के द्वारा हुआ। फिर भी यह कहा जा सकता है कि नव-पाषाणकालीन संस्कृति का प्रसार भारत के विशाल भू-प्रदेश में हो चुका था। इस काल की सामग्री कश्मीर, सिन्धु प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, बंगाल, असम, मध्यप्रदेश आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक और प्रमुखतया बेलारी जिले में उपलब्ध हुई है। यह सभ्यता देश के उत्तर-पश्चिम में ईसा से चार-पाँच हजार वर्ष पहले शुरू हुई तथा देश के विभिन्न भागों में विकसित होती गई।

नव-पाषाणकाल में जो पत्थर के औजार और हथियार मिले हैं, वे काफी सुडौल और सुन्दर हैं। इन औजारों और हथियारों पर या तो सम्पूर्ण भाग पर पालिश है या कम-से-कम ऊपर और नीचे के सिरों पर पालिश है। विद्वानों के मतानुसार इनका निर्माण करने वाले 'प्रोटो-आस्ट्रेलायड' जाति के लोग थे जिनकी संस्कृति 'निओलिथिक कल्चर' के नाम से प्रसिद्ध है।

नव पाषाण युगीन मानव की संस्कृति
(Neolithic or New Stone Age Culture)

नव-पाषाण युगीन मानव की सभ्यता और संस्कृति को रूप रेखा भी इस युग के उपकरणों के आधार पर

बनाई जा सकती है। इसके आधार पर हो नव पाषाण युग के आर्थिक, सामाजिक तथा अन्य क्षेत्रों के जीवन की खपरेखा खड़ी की जा सकती है।

(i) आर्थिक क्षेत्र :→ नव पाषाण युगीन मानव के कृषि के साथ - साथ पशुपालन भी प्रारम्भ कर दिया। इस युग की बस्तियों में मनुष्य के अवशेषों के साथ - साथ दूध देने वाले जानवरों के आस्थि पंजर भी उपलब्ध हुए है। इस युग के लोगों ने कृषि तथा पशुपालन से अपनी आजीविका का निर्वाह करके आर्थिक समस्या को हल करना प्रारम्भ कर दिया। पशुओं को पालकर वह दूध - दही, मक्खन भी खाता था और उनके माँस का भी उपयोग करता था। कृषि तथा पशुपालन से मनुष्य ने एक नवीन युग में प्रवेश किया। इस समय का मनुष्य वृक्षों के नीचे गुफाओं में या चमड़े के तम्बू बनाकर उनमें रहने के स्थान हेतु लकड़ी के मकान बनाकर रहने लगा था। फ्रांस तथा स्विटजरलैण्ड में इस युग की जो बस्तियाँ मिली, उनसे यह स्पष्टतया प्रतीत होता है जो कि इस युग का मानव पशुपालन द्वारा सिर्फ दूध - दही ही नहीं प्राप्त करता था, बल्कि बैलों तथा घोड़ों से हल भी जोतता था। गाड़ी के पत्थर के चक्के (पहिए) मिले है जिससे यह सिद्ध होता है कि इस युग में माल ढोने के लिए बैलगाड़ी या घोड़ा गाड़ी भी चलने लगी थी। कृषि एवं पशुपालन से प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकता से अधिक पदार्थ प्राप्त होने लगा। इस अतिरिक्त पदार्थ को वह दूसरों के अतिरिक्त पदार्थ के बदले में देने लगा। इस प्रकार अदला - बदली द्वारा आवश्यकताएँ पूर्ण की जाने लगी।